Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारत-चीन संबंध : राष्ट्रीय सुरक्षा की चुनौती से जूझता भारत

डॉ. नीरज कुमार *

* सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शासकीय राजनारायण स्मृति महाविद्यालय, बैढ़न, जिला-सिंगरौली (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – एक समय था जब भारत में सीमा पर खतरे के रूप में रूस को देखा जाता था। यह ब्रिटेन और रूस के बीच साम्राज्यवादी प्रतिद्वंद्विता के कारण होता था। ऐसे में तिब्बत को दोनों में से कोई नहीं चाहता था कि दूसरा उस पर प्रभुत्व स्थापित करे। इसलिए दोनों तिब्बत पर चीन की प्रभुत्ता स्वीकार करते थे और चीन के मध्यम से ही उससे संबंध स्थापित करने का सहमति जताते थे। चीन भारत की आजादी तक इस स्थिति में नहीं था कि भारत पर शासन कर रहे ब्रिटेन को चुनौती दे पाए। ब्रिटेन का भारत से जाने के बाद और भारत की आजादी के दो साल बाद ही चीन में साम्यवादी तानाशाही की स्थापना के साथ ही भारत-तिब्बत सीमा पर चीन से चुनौती मिलने लगी। फिर भी 1954 में पंचशील को मान्यता देने से लेकर 1958 के बीच के चार साल के काल को भारत-चीन दोस्ती, का काल कहा जाता है जिसमें हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा लगाया जाता था। 1958 में चाइना पिक्टोरियल द्वारा प्रकाशित चीन के मानचित्रों में भारत के उत्तर-पूर्व के लगभग 36,000 वर्गमील और उत्तार-पश्चिम के लगभग 12000 वर्गमील प्रदेश को चीन के भाग के रूप में दिखाया गया।[1] उसके बाद से विवाद बढ़ता गया और चीन ने अक्टुबर 1962 में भारत पर आक्रमण कर दिया। भारत युद्ध के लिए तैयार न था। भारत को करारी हार का सामना करना पड़ा। लद्दाख के एक बड़े हिस्से पर चीन कब्जा कर लिया जो अभी भी बरकरार है। विदेश मंत्री नरसिम्हा राव ने 5 दिसंबर 1980 को राज्य सभा में एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि चीन भारतीय भूमि के 14500 वर्गमील पर कब्जा कर बैठा है।[1] दोनों देशों के संबंध बहुत समय तक कटु बने रहे। संबंध सूधारने की दिशा में दोनों ओर से प्रयास हुए। युद्ध के बाद 1976 में के.आर. नारायणन को चीन में भारत का राजदूत नियुक्त किया गया। 1979 में भारत के तात्कालीन विदेशी मंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने चीन का दौरा किया। फिर 1988 में भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी चीन गए। नरसिम्हा राव भारत के प्रधानमंत्री के रूप में 1993 में चीन की यात्रा पर गये जहां निश्चित हुआ था कि सीमा विवाद को पृथक रखकर, अन्य क्षेत्रों में मित्रतापूर्ण संबंधों का विकास किया जाए। यह भी निश्चित किया गया था कि वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शांति और सद्भावना बनाए रखी जाए। इस बात पर भी सहमति हुई थी कि वास्तविक नियंत्रण रेखा को मान्यता देने का अर्थ यह नहीं था कि कोई भी पक्ष अपने सीमा संबंधी दावों का त्याग कर रहा था। मात्र सीमा विवाद को ठंडे बर्फ में डाल दिया गया था।[2]

इसके बाद 29 नवंबर 1996 में चीन के राष्ट्रपति जियांग जेमिन के भारत दौरे के दौरान चार समझौतों पर हस्ताक्षर हुए जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण समझौता था – भारत-चीन सीमा पर वास्तविक नियंत्रण रेखा के साथ साथ सैनिक क्षेत्र में विश्वास उत्पन्न करने वाला समझौता। वी.पी. दत्ता के अनुसार, शायद, यह चीन के साथ सबसे महत्वपूर्ण समझौता था। वास्तव में युद्ध नहीं का वास्तविक इकरारनामा था जिसे दोनों देशों ने इस समझौते के तहत संकल्पित किया था। इसका सार यह था कि दोनों देश एक-दूसरे के विरूद्ध सैन्य शक्ति का इस्तेमाल नहीं करेंगे।[3] इस पहले समझौते की महत्वपूर्ण बातें इस प्रकार से हैं :

1. दोनों में से कोई पक्ष अपनी सैनिक शक्ति को दूसरे पक्ष के विपरीत सामने नहीं लायेगा।
2. दोनों पक्षों का यह विश्वास है कि सीमा रेखा का सवाल पारस्परिक समझौते से सुलझा लिया जायेगा। तब तक वर्तमान सीमा रेखा का उल्लंघन नहीं होगा।
3. किसी सूरत में भी सीमा रेखा पर सैनिक बल नहीं बढ़ाया जायेगा बल्कि जहां तक होगा सैनिक बल को हटाया जायेगा।
4. सीमा रेखा के आस-पास सैनिक अभ्यास भी केवल उसी हिसाब से किये जायेंगे जैसा पहले तय हो जाये।
5. लड़ाकू वायुयान सीमा रेखा के 10 किमी तक अन्दर नहीं घुसेंगे।
6. सीमा रेखा के दो किमी तक किसी तरह की फायरिंग नहीं की जायेगी। गश्ती दस्ते यदि सामने भी आ जायेंगे तो अपने ऊपर बंधन मानकर अलग-अलग हो जायेंगे।
7. सीमा के सैनिक कमांडर आपस में मिलते रहेंगे।
8. यदि किसी मामले पर शक हो तो एक पक्ष दूसरे पक्ष से स्पष्टीकरण प्राप्त करेगा और विशेषज्ञों का एक दल यह बात तय करेगा कि इस समझौते के प्रस्तावित पक्ष कैसे कार्यान्वित किये जायें।[4]

इस तरह के कदमों से भारत और चीन के बीच संबंध सुधरे और व्यापार का तेजी से विकास होने लगा। 2002 में भारत चीन व्यापार 5 अरब डॉलर हो गया। तत्कालीन चीनी प्रधानमंत्री झू (ज्हू) रौंगजी ने 2005 तक 10 अरब डॉलर के व्यापार का लक्ष्य निर्धारित किया था। लेकिन यह उससे भी ज्यादा बढ़कर 2004 तक ही 13 अरब डॉलर से ऊपर हो चुका था।[5] कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज मिनिस्ट्री के आंकड़ों के मुताबित, फरवरी 2023 में 10 लाख 38 हजार 772 करोड़ रुपये के द्विपक्षीय व्यापार के साथ अमेरिका भारत का सबसे बड़ा ट्रेड पार्टनर था। आर्थिक शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च

इनिशिएटिव (जीटीआरआई) के आंकड़ों के मुताबित, भारत के साथ वित्त वर्ष 2023-24 में द्विपक्षीय व्यापार के मामले में चीन ने अमेरिका को पीछे छोड़ दिया है। इस अवधि में भारत और चीन के बीच कुल 118.4 अरब डॉलर का व्यापर हुआ। वहीं, अमेरिका के साथ द्विपक्षीय व्यापार 118.3 अरब डॉलर रहा। 2021-22 और 2022-23 में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार अमेरिका रहा था। भारत को चीन के साथ व्यापार में 85.09 अरब डॉलर का व्यापार घाटा है।[6] अमेरिका के साथ व्यापार में भारत से निर्यात अधिक है जबकि चीन से व्यापार में भारत का आयात अधिक है।

चीनी नेता देंग झियाओपेंग ने चीन के विकास के शुरुआती वर्षों में आदेश दे रखा था कि चीन को 'अपनी क्षमताओं को छिपाकर, अपने वक्त का इंतजार करना चाहिए।'[7] इस नीति ने चीन को बहुत लाभ पहुंचाया। चीन को आर्थिक क्षेत्र में बीना किसी बड़े प्रतिरोध के तेज विकास का मौका मिला। देंग झियाओपेंग ने 1978 में जिन आर्थिक सुधारों की नीवं रखी उसी की बदौलत आज चीन तरक्की की उंचाई पर है। 2010 में जापान को पीछे छोड़ अमेरिका के बाद विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया। उसके बाद से उस स्थान पर बना हुआ है।

इस तरह स्पष्ट है कि सीमा विवाद को ठंडे बक्से में डालकर चीन अपने विकास को तीव्र किया और किसी बड़े संघर्ष की संभावना टाला तथा वक्त का इंतजार किया। इस दौरान भारत के साथ संबंध अच्छे बने रहे। कोई बड़ा विवाद उत्पन्न नहीं किया गया। ऐसा लगता है कि शी जिनपिंग के नेतृत्व में चीन यह मानने लगा है कि उस कथन का समय खत्म हो गया है। जैसा राष्ट्रपति शी ने अक्टुबर, 2017 में कहा था,... चीनी राष्ट्र अब महज खड़े होने से आगे अमीर और शक्तिशाली बनने की ओर बढ़ गया है।'[8]

चीन अब अपना हार्ड पावर दिखाने लगा है। वह अब आक्रामक व्यवहार करने लगा है। इसी साल 2017 में भारत-चीन-भूटान सीमा पर डोकलाम घाटी में चीन द्वारा सड़क निर्माण को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ जिसने भारत और चीन के बीच तनाव को बढ़ा दिया। यह स्थान भारत के चिकेन नेक और सिलीगुड़ी कोरिडोर के पास है और चीन के इस प्रयास से भारत को खतरा उत्पन्न हो रहा था। फिर जून 2020 में गलवान घाटी में झड़प में 20 भारतीय सैनिकों के शहीद हो जाने से जो तनाव ठंडे बक्से में था बाहर आ गया। इसमें जिन समझौतों से दोनों देशों के संबंध बेहतर हुए थे उसका गलवान में उल्लंघन हुआ है। राष्ट्रपति शी और प्रधानमंत्री मोदी के बीच पिछली कई बैठकों के बावजूद भारत, चीन की आक्रामकता से आश्चर्यचकित रह गया था। लेकिन ऐसा पहली बार नहीं है, जब भारत चीन के कदम से चकित रह गया हो। प्रधानमंत्री नेहरू को भी वर्ष 1962 में चीनी आक्रामकता की थाह नहीं लग पाई थी।[9] वी.पी दत्ता ने लिखा है कि पचास और साठ के दशकों में भारत और चीन के बीच सैन्य शक्ति की यह असमानता ही दोनों के संबंध खराब करने का मुख्य कारण थी। अपनी सैन्य क्षमता में अपेक्षित संतुलन के लिए दानों में कुछ हद तक समानता लाना और बनाए रखना चीन तथा एषिया में शांति रखने के हित में है।[10] भारत को यह समझना होगा कि चीन के साथ उसके संबंध तब तक अस्थिर ही रहेंगे, जब तक चीन को भारत कमजोर नजर आता रहेगा।[11]

चीन की अर्थव्यवस्था केवल अमेरिका से छोटी है। अनुमान लगाया जा रहा है कि कुछ ही वर्षों में अमेरिका की अर्थव्यवस्था को भी पीछे छोड़ देगा। अभी अमेरिका के अलावा चीन की अर्थव्यवस्था के आकार के सामने कोई भी देश आसपास भी नहीं है। विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था जर्मनी से चीन की अर्थव्यवस्था चार गुणा से भी ज्यादा बड़ी है। अमेरिका की 28.78, चीन की 18.53, जर्मनी की 4.59, जापान की 4.11 और भारत की 3.94 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्थाएं हैं।[12] चीन के पास सबसे ज्यादा विदेशी मुद्रा भंडार है। जिससे वह दुनिया को कर्ज के जाल में फसा रहा है। यह भारत के विदेशी मुद्रा भंडार से पांच गुणा है। चीन की सेना तीसरी सबसे बड़ी सेना है। दुनिया की सबसे बड़ी नौसेना चीन के पास हो गई है। भारत की अर्थव्यवस्था पांचवें स्थान पर है। सेना भी चीन के बाद चौथी सबसे बड़ी सेना है लेकिन चीन और भारत के बीच अर्थव्यवस्था हो या सामरिक अंतर ज्यादा है। चीन की अर्थव्यवस्था भारत से पांच गुणी से कुछ ही कम है। 1962 में भारत चीन के बीच युद्ध हुआ। उस वक्त दोनों देशों की ताकत में ज्यादा फर्क नहीं था। तब चीन की जीडीपी भारत से करीब 12 प्रतिशत ज्यादा थी।[13] 2007 में चीन के अर्थव्यवस्था का जो आकर था वह जाकर हाल ही में भारतीय अर्थव्यवस्था का हुआ है इस तरह हम देखते हैं कि भारत की अर्थव्यवस्था चीन की अर्थव्यवस्था से करीब 15-16 साल पीछे है। चीन की बढ़ती आर्थिक और सैनिक ताकत से भारत को चुनौती मिलने लगी है 2020 के गलवान घाटी में हुई झड़प के बाद भारत चीन के मुकाबले में ज्यादा सचेत दिख रहा है चीन के मुकाबले में भारत अपनी आर्थिक और सैनिक ताकत को उसी अनुपात में नहीं बढ़ा सका जिस अनुपात में चीन के मुकाबले आवश्यकता थी। अब जबकि चीन हर तरह से सशक्त होकर भारत के लिए खतरा बनता जा रहा है भारत को हर तरफ से घेरता जा रहा है इससे निपटना भारत के लिए बहुत ही चुनौती पूर्ण है।

भारत का नंबर वन दुश्मन पाकिस्तान भारत के खिलाफ हमेशा मुखर रहा है और भारत से चार युद्ध भी लड़ चुका है। भारत के लिए खतरा तो है ही लेकिन आज पाकिस्तान के साथ ही साथ चीन को प्रमुख स्थान देकर चुनौती से निपटने का प्रयास किया जा रहा है। चीन न केवल पाकिस्तान बल्कि भारत के अन्य पड़ोसियों पर भी अपना प्रभाव स्थापित करता जा रहा है। पाकिस्तान और चीन के बीच गहरी दोस्ती है। दोनों से भारत सीमा साझा करता है जिसपर खतरा मंडराता रहता है। भारत हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ती नौसैनिक उपस्थिति और सैन्य ठिकानों के साथ-साथ समुद्री क्षेत्र में पाकिस्तान के साथ उसकी बढ़ती सांठगांठ से चिंतित है। 355 युद्धपोतों और पनडुब्बियों के साथ दुनिया की सबसे बड़ी नौसेना के साथ, चीन पाकिस्तान को एक मजबूत समुद्री बल बनाने में भी मदद कर रहा है। उदाहरण के लिए बीजिंग ने पहले ही इस्लामाबाद को चार टाइप 054ए/पी मल्टी-रोल फ्रीगेट दिए हैं, जबकि आठ युआन-क्लास डीजल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों की डिलीवरी भी जल्द ही शुरू होने वाली है।[14] सीपीईसी 60 अरब डॉलर की परियोजना है। यह गलियारा पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) से होकर गुजर रहा है। भारत सीपीईसी का विरोध करता है क्योंकि यह पीओके से होकर गुजरता है। चीन को पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में ग्वादर बंदरगाह के माध्यम से अरब सागर तक पहुंच मिलती है।[15]

जापान से लेकर अफ्रीका तक विस्तारवादी नीतियों में लगा चीन अपनी मोतियों की माला की नीति (स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स नीति) के तहत दक्षिण एशिया के छोटे-छोटे देशों में सामरिक एवं आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण अड्डों का निर्माण करके भारत को घेरने की लंबे समय से जीतोड़ कोशिश कर रहा है। चीन बांग्लादेश, म्यामांर में नेवल बेस की स्थापना में मदद कर रहा है। दोनों ही देशों को चीन हथियार और अन्य साजों सामान दे रहा है। चीन मालदीव में भारत से मात्र कुछ सौ किलोमीटर की दूरी पर एक कृत्रिम द्वीप बना रहा है।

श्रीलंका के रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हंबनटोटा बंदरगाह को 99 साल के लिए लीज पर ले लिया है। इस तरह से चीन पाकिस्तान के ग्वादर पोर्ट को नेवल बेस के रूप में विकसित कर रहा है। बताया जा रहा है कि मलक्का स्ट्रेट में भारत और अमेरिका की नजर से बचने के लिए चीन ग्वादर पोर्ट का इस्तेमाल करेगा। इसी तरह से चीन कंबोडिया में भी एयर बेस और नेवल बेस बना रहा है। जापान का चीन के साथ एक निर्जन द्वीप को लेकर विवाद चल रहा है। माना जा रहा है कि एशिया में जापान और चीन के बीच अगली भिड़ंत हो सकती है। उधर, ऑस्ट्रेलिया के पास सोलोमन द्वीप पर चीन नेवल बेस बनाने की तैयारी कर रहा है। चीन के साथ अमेरिका का ट्रेड वॉर और ताईवान को लेकर विवाद बढ़ गया है।[16]

भारत और म्यामांर के बीच 1643 किलोमीटर की सीमा रेखा है जो की भारत के चार महत्वपूर्ण राज्यों अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर और मिजोरम से जोड़ती है। एक राज्य अरुणाचल प्रदेश पर तो चीन की बुरी नजर है ही बाकी के अन्य तीन राज्यों में तनाव बरकरार रहता है मणिपुर तो हाल ही में बहुत बड़े तनाव से गुजरा है और समस्या अभी भी सुलझाया नहीं जा सका है। चीन म्यामांर में म्यामांर-चीन-आर्थिक-गलियारा जो कि बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव की महत्वाकांक्षी परियोजना का हिस्सा है को पूरा करना चाहता है इसके माध्यम से चीन बंगाल की खाड़ी में पहुंच बना कर भारत को और परेशान कर देगा। एक ओर ग्वादर बंदरगाह जो चीन के शिनजियांग प्रांत को अरब सागर में पहुंच प्रदान करता है वहीं चीन के यूनान प्रांत को इस म्यामांर के गलियारे के माध्यम से बंगाल की खाड़ी में पहुंच प्रदान हो जाएगा। यह भारत की सुरक्षा के लिए परेशानी का कारण बन सकता है इसलिए भारत को म्यामांर से बेहतर संबंध निर्माण के लिए लगातार प्रयास करने की आवश्यकता है। म्यामांर एक्ट ईस्ट पॉलिसी के लिए एक महत्वपूर्ण द्वार है। आसियान का एक अहम भाग भी म्यामांर है जिससे कि भारत जुड़ना चाहता है इस प्रयास में हाल ही में सित्तवे पोर्ट जो भारत के कलादान मल्टी मॉडल ट्रांसिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट जिसे कलादान परियोजना भी कहते हैं का हिस्सा है के चालू होने से इस राह में एक महत्वपूर्ण सफलता माना जा रहा है। चीन के द्वारा बंगाल की खाड़ी में बनाया जा रहा बंदरगाह क्याउकफ्यु में बनाया जा रहा है। म्यांमार के क्याउकफ्यु की लोकेशन बेहद खास है। यह भारत के पूर्वी तटों के लिए सीधा खतरा है। खास तौर से भारत के निर्माणाधीन नौसैनिक अड्डे आईएनएस वर्षा के यह करीब है। भारत की रक्षा के लिए यह देश बेहद खास है। परमाणु हमले और बैलिस्टिक मिसाइल पनडुब्बियों (एसएसबीएन) को रखने के लिए यह बेहद खास है। इस बेस से पनडुब्बियों को गुप्त रखा जा सकता है। अगले दो दशकों में भारत में बेहद कम संख्या में एसएसबीएन होने की संभावना है। अगर चीन इन नौकाओं की आवाजाही पर नजर रखने में सक्षम रहा तो युद्ध की स्थिति में वह बेहत्तार स्थिति में होगा। इसके अलावा यह बंदरगाह अब्दुल कलाम द्वीप के पास है जिसका इस्तेमाल डीआरडीओ की ओर से मिसाइल के परीक्षण के लिए किया जाता है। यहां उन मिसाइलों का भी परीक्षण हुआ है जिन्हें परमाणु युद्ध की स्थिति में चीन को टारगेट करने के लिए बनाया गया है।[17] भारत अपनी सुरक्षा को बढ़ाने के लिए क्वॉड जैसे संगठनों की स्थापना में भागीदार रहा है। क्वाड्रीलैटरल सिक्यॉरिटी डायलॉग (क्वॉड) की शुरुआत वर्ष 2007 में हुई थी। हालांकि इसकी शुरुआत वर्ष 2004-2005 को हो गई जब भारत ने दक्षिण पूर्व एशिया के कई देशों में आई सुनामी के बाद मदद का हाथ बढ़ाया था क्वॉड में चार देश अमेरिका जापान ऑस्ट्रेलिया और भारत शामिल हैं।[18] इसमें न्यूजीलैंड, दक्षिण कोरिया और वियतनाम भी शामिल किए जाने की बात हो रही है। यह चीन को काउंटर करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

जब चीन ने दक्षिण चीन सागर के इलाके में अपना एक तरफ दबदबा कायम करने के लिए घुसपैठ को तेज कर दिया नतीजा यह रहा की चीन की इन हरकतों पर आसियान के दस में से पांच देशों ने आपत्ति जाहिर कर दी। इन देशों में मलेशिया वियतनाम, ब्रुनेई, फिलिपींस और इंडोनेशिया शामिल हैं। इन देशों में हथियारों का उत्पादन काफी कम है दुनिया में हथियार बनाने वाली टॉप 10 कंपनियों में आसियान से केवल सिंगापुर की कंपनी शामिल है। ऐसे में दक्षिण चीन सागर में चीन को चुनौती देने के लिए उन्हें दूसरे देशों के हथियारों की जरूरत है। भारत भी इस मार्केट में अपनी एंट्री के लिए तेजी से काम कर रहा है। आसियान देशों को हथियार देकर भारत न सिर्फ चीन को हिंद महासागर से बाहर करने की कोशिश कर रहा है बल्कि इसके जरिए चीन को उसी के पड़ोस में घेरने में मदद भी कर रहा है। दरअसल भारत से जो मिसाइल और हथियार आसियान को देने की तैयारी की जा रही है। वह दक्षिण चीन सागर के पास तैनात किए जाएंगे। भारत सिर्फ ब्रह्मोस ही नहीं बल्कि लड़ाकू एयरक्राफ्ट तेजस आसियान देशों को बेचने की कोशिश कर रहा है। जिससे दक्षिण चीन सागर में चीन के जहाज पर नजर रखी जा सकेगी।[19] आक्रामक चीन की मौजूदगी के कारण भारत आसियान देशों जैसे सिंगापुर, वियतनाम, इंडोनेशिया और फिलीपींस के साथ नियमित संयुक्त अभ्यास, सैन्य आदान-प्रदान और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से रक्षा संबंधों को लगातार उन्नत कर रहा है। इस दिशा में पिछले साल मई में पहली बार आसियान-भारत समुद्री अभ्यास (एआईएमई) भी आयोजित किया गया था। तब भारत, फिलीपींस, इंडोनेशिया, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, ब्रुनेई और वियतनाम के युद्धपोतों ने दक्षिण चीन सागर में संयुक्त अभ्यास किया था। जनवरी 2022 में हुए 375 मिलियन डॉलर के सौदे के तहत पिछले महीने फिलीपींस को 290 किलोमीटर की ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइलों की डिलीवरी शुरू करने के बाद भारत आसियान देशों को हथियारों की आपूर्ति भी बढ़ना चाहता है।[20]

भारत 2008 से चलाये गये बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव में शामिल नहीं है। इसलिए क्योकि भारत इसे चीन का झासा समझता है जिसके परिणामस्वरूप चीन दूसरे देशों पर प्रभाव स्थापित करता है। दूसरी पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से चीन शिनजियांग प्रांत से बेल्ट एंड रोड इनिसिएटिव से संबंधित चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारे का निर्माण कर रहा है। भारत इसे अपनी संप्रभुता का उल्लंघन मानता है। बीआरआई के माध्यम से बहुत हद तक दुनिया पर चीन प्रभाव स्थापित कर लिया है। अमेरिका और भारत इसकी काट नहीं निकाल पा रहे थे। चीन ने अपनी इस परियोजना के जरिए यूरोप से लेकर अफ्रिका और एशिया से लेकर लैटिन अमेरिका तक अपने प्रभाव, निवेश और व्यापार को पहुंचाया है।[21] लेकिन सितंबर में भारत में हुए जी 20 की बैठक में भारत ने अमेरिका, सऊदी अरब और यूरोपीय देशों के नेताओं के साथ मिलकर 'इंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप-इकोनॉमिक-कॉरिडोर' लॉन्च किया है। भारत से लेकर अमेरिका और यूरोप से लेकर मध्य पूर्व के नेता इसे एक ऐतिहासिक समझौता बता रहे हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडन ने इसे मध्य पूर्व में समृद्धि लाने वाला समझौता करार दिया है। अमेरिकी थिंक टैंक द विल्सन सेंटर के दक्षिण एशिया इंस्टीट्यूट के निदेशक माइकल कुगलमैन इस समझौते को चीन की महत्वाकांक्षी परियोजना

बीआरआई की मजबूत प्रतिक्रिया के रूप में देखते हैं। कुगलमैन ने ट्विटर पर लिखा है कि, 'अगर ये डील हो जाती है तो ये डील गेम चेंजर साबित होगी क्योंकि ये भारत को मध्य पूर्व से जोड़ेगी और बेल्ट एवं रोड इनिशिएटिव को चुनौती देगी।' इस परियोजना के तहत मध्य पूर्व में स्थित देशों को एक रेल नेटवर्क से जोड़ा जाएगा जिसके बाद उन्हें भारत से एक शिपिंग रूट के माध्यम से जोड़ा जाएगा। इसके बाद इस नेटवर्क को यूरोप से जोड़ा जाएगा।[22] यूरोप में इसे यूनान से जोड़ा जाना है। इस परियोजना में शामिल नहीं किए जाने पर तुर्की ने विरोध जताया है। फिलहाल इजराइल-हमास युद्ध ने इस परियोजना पर प्रश्न चिन्ह खड़ा कर दिया है। रॉयटर्स के एक रिपोर्ट के अनुसार,'इस कॉरिडोर के लिए इजराइल और सऊदी अरब के बीच बेहतर रिश्ते चाहिए। अरब देश फलस्तीन का समर्थन करते हैं और गजा पर इसराइल बम करसा रहा है, ऐसे में रिश्ते सामान्य कैसे हो सकते हैं।'[23]

ईरान के तेल का चीन बहुत बड़ा खरीदार है और चीन करोड़ों डॉलर का निवेशष ईरान मे कर रहा है। दोनों देशों ने 2021 में 25 वर्षों के लिए एक व्यापक रणनीतिक और आर्थिक सहयोग योजना पर समझौता किया था जिसके तहत चीन ईरान में करीब 400 अरब डॉलर का निवेश करेगा। बदले में ईरान वैश्विक दरों के मुकाबले कम कीमत पर चीन को तेल, गैस और पेट्रो-केमिकल उत्पाद मुहैया कराएगा।[24] साल 2015 में ईरान ने जर्मनी, चीन, अमरीका, फ्रांस, ब्रिटेन और रूस के साथ एक समझौता किया था, जिसके तहत ईरान पर लगे प्रतिबंधों को हटाने के बदले ईरान को अपने परमाणु कार्यक्रमों पर नियंत्रण लगाना था। लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ने 2018 में अमेरिका को इससे अलग कर लिया था उसके बाद से यह समझौता रद्द हो गया था।[25] ईरान से भारत का ऐतिहासिक संबंध रहा है। शिया मुसलमानों की संख्या भारत में ईरान के बाद सबसे ज्यादा है। 2018 में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा ईरान से समझौता रद्द करने से ईरान पर प्रतिबंध लगा दिया गया जिससे ईरान और भारत के बीच के संबंधों पर विपरित प्रभाव पड़ा। भारत ईरान से तेल नहीं खरीद पा रहा है और साथ ही कई महत्वपूर्ण परियोजनाए ठंडे बक्से में चला गया है। चीन प्रतिबंध नहीं मानता है जिससे उसके संबंध ईरान से बेहतर होता जा रहा है। मार्च 2023 में चीन की मदद से ईरान और सऊदी के बीच समझौता भी होता है।

इजरायल और हमास के बीच के संघर्ष ने भी भारत-ईरान संबंध को चुनौती मिल रही है। इन विपरित परिस्थितियों में भारत ईरान से संबंधों को आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत है। शाहिद बेहेस्ती ईरान का दूसरा सबसे अहम बंदरगाह है। ये समझौता इंडिया पोर्ट् ग्लोबल लिमिटेड और पोर्ट् एंड मैरीटाइम आर्गेनाइजेशन ऑफ ईरान के बीच हुआ है। पाकिस्तान और चीन ईरानी सरहद के करीब ग्वादर पोर्ट को विकसित कर रहें हैं। भारत, ईरान और अफगानिस्तान तथा मध्य एशिया को जोड़ने वाले चाबहार पोर्ट को ग्वादर पोर्ट के लिए चुनौती के तौर पर देखा जाता है। लंबी अवधि का ये समझौता दस साल के लिए है और इसके बाद ये खुद ही आगे बढ़ जाएगा। साल 2016 में ईरान और भारत के बीच शाहिद बेहेस्ती बंदरगाह के संचालन के लिए समझौता हुआ था। नए समझौते को 2016 समझौते का ही नया रूप बताया जा रहा है। भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि इस समझौते से पोर्ट में बड़े निवेश का रास्ता खुलेगा। यह पोर्ट चाबहार पोर्ट से सड़क के रास्ते केवल 400 किलोमीटर दूर है जबकि समुद्र के जरिए यह दूरी महज 100 किमी ही बैठती है। इस तरह से ग्वादर और चाबहार पोर्ट को लेकर भी भारत और चीन के बीच टक्कर है। रणनीतिक लिहाज से भी ग्वादर पोर्ट में चीनी मौजूदगी भारत के लिए दिक्कत पैदा कर सकती है। ऐसे में चाबहार पोर्ट में अपनी मौजूदगी होना भारत के हक में माना जाता है।[26]

रूस-युक्रेन युद्ध ने भी भारत को परेशानियों में डाला है। अमेरिका और पश्चिम के देश युक्रेन को हर तरह से सहायता प्रदान कर रहे है। भारत भी मेडिकल सहायता उपलब्ध करा रहा है। भारत को चीन से मुकाबला करने के लिए रूस, अमेरिका और पश्चिमी देशों के सहायता की आवश्यकता है। रूस भारत का परखा हुआ मित्र है जिसने विपरित परिस्थितियों में भारत का साथ दिया है। भारत की रूसी हथियारों पर भी निर्भरता रही है। युक्रेन युद्ध और पश्चिमी देशों के प्रतिबंधों के कारण रूस चीन का बेहद करीबी मित्र हो गया है जो भारत के लिए अच्छा नहीं माना जा रहा है। वैसे ही रूस के लिए अमेरिका और पश्चिमी देशों से भारत की करीबी रूस को अच्छा नहीं लगता। पश्चिमी देश भारत को युक्रेन के पक्ष में लाने का भरपूर प्रयास कर रहे हैं लेकिन भारत रूस के खिलाफ कभी नहीं गया है। भारत में दोनों से संबंध बनाए रखने के लिए परिश्रम करना पड़ रहा है। भारत के प्रधानमंत्री युद्ध के दौरान रूस जाते हैं तो उन्हें तुरंत बाद युक्रेन भी जाना पड़ता है। इसी तरह से इजरायल और हमास युद्ध में मुस्लिम देशों और इजरायल के बीच संबंधों को ठीक रखने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। भारत किसी एक का पक्ष लेने से बचता रहा है। इस परिस्थितियों में चीन को लाभ होता जा रहा है क्योंकि चीन को भारत की तरह संतुलन स्थापित करने की जरूरत नहीं है।

चीन और भारत पूरब की दो महान सभ्यताएं रहे हैं। ये दोनों देश उपनिवेशवाद के युग में शोषण के शिकार रहे हैं। भारत और चीन का आजादी से पहले से ही अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर समान नजरियां रहा है और दोनों साथ आये हैं। आज भी नई विश्व व्यवस्था और पश्चिम के वर्चस्व के खिलाफ, जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर एक दृष्टिकोण रखते हैं। दोनों मिलकर इस सदी को एशिया की सदी बनाने, समता मूलक विश्व बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते थे लेकिन चीन की अहंकार की भावना ने और दोनों देशों के सीमा विवाद के कारण भारत को चीन एक खतरा और चुनौती के रूप में दिखाई देने लगा है। जबतक सीमा विवाद हल नहीं हो जाता तबतक खतरा मंडराता रहेगा। भारत को अपने महत्वपूर्ण संसाधन सुरक्षा को बढ़ाने में खर्च करते रहना पड़ रहा है। हमारे लिए एक साथ कई मोर्चो पर लड़ने की तैयारी ही भारत की सुरक्षा को बढ़ा सकता है। इसके लिए तीव्र आर्थिक विकास बेहद जरूरी है। भारत विकास की ओर अग्रसर भी है। सुरक्षा पर ज्यादा से ज्यादा खर्च लोक कल्याणकारी योजनाओं और विकास की अन्य योजनाओं को पूंजी प्रदान करने को सीमित करता है। भारत की आज की क्षमता चीन का मुकाबला करने के लिए कमत्तार ही मानी जाएगी। इसलिए भारत को अमेरिका और पश्चिम से अच्छे संबंधों की दरकार है। अमेरिका और पश्चिम को भी चीन से मुकाबला करने के लिए भारत की आवश्कता है। भारत रूस से अच्छे संबंध बनाये रखना चाहेगा क्योंकि रूस हमारा आजमाया हुआ मित्र रहा है। भारत की आधे से सैनिक साजों समान वही से आते है। रूस का चीन से मित्रता बनाने के बावजूद भारत से दूर नहीं जाना चाहेगा क्योंकि भारत जैसा मित्र और अहम देश को खोना उसके लिए बहुत बड़ा नुकसान होगा। भारत को विदेश नीति में संतुलन बनाते हुए चलना होगा। किसी पर पूर्णत: निर्भरता से बचने के लिए अपनी क्षमताओं का विकास भारत कर रहा है। जिससे भारत की विदेश नीति को स्वतंत्र बनाये रखने में सहायता मिलेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. वी. पी. दत्त, 2011, *बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति भाग-1 (1950-1987)*, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, पृष्ठ 211
2. वी. एन. खन्ना और लिपाक्षी अरोड़ा, 2008, *भारत की विदेश नीति*, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली, पृष्ठ 176
3. वी. पी. दत्त, 2003, *बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति*, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, पृष्ठ 524
4. डॉ. पुष्पेश पंत, श्री पाल जैन, डा. राखी पंचौली, 2016-17, *अंतर्राष्ट्रीय संबंध : सिद्धांत और व्यवहार,* मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, पृष्ठ 468
5. वी. एन. खन्ना और लिपाक्षी अरोड़ा, पूर्वोक्त, पृष्ठ 185-86
6. *दावा: 2023-24 में भारत-चीन के बीच 118.4 अरब डॉलर का व्यापार, द्विपक्षीय कारोबार में चीन ने अमेरिका को पछाड़ा*, 13 मई 2024, www.amarujala.com देखा गया 7 सितंबर 2024
7. रघुराम जी. राजन और रोहित लाम्बा, 2023ब *ब्रेकिंग इ मोल्ड,* पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया, गुड़गांव, पृष्ठ 197
8. वही,
9. वही, पृष्ठ 203-4
10. वी. पी. दत्त, 2003, *बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति*, पूर्वोक्त, पृष्ठ 300-301
11. रघुराम जी. राजन और रोहित लाम्बा, पूर्वोक्त, पृष्ठ 204
12. *टॉप 5 लार्जेस्ट इकोनॉमीज इन वर्ल्ड : दुनिया की पांच सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था कौन सी हैं? जाने अमीर देशों में किस नंबर पर भारत*, 2 सितंबर, 2024, www.jansatta.com, देखा गया 8 सितंबर 2024
13. *1962 युद्ध के समय हमसे सिर्फ 12 प्रतिशत ज्यादा थी चीन की जीडीपी, आज भारत से 5 गुना बड़ी इकोनॉमी, डिफेंस बजट हमसे 8 गुना*, 4 साल पहले, www.bhaskar.com/national, देखा गया 8 सितंबर 2024
14. *चीन पर नजर रखते हुए भारत ने दक्षिण चीन सागर में तीन युद्धपोत तैनात किए*, 7 मई 2024, https://timesofindia.indiatimes.com, 8 सितंबर 2024
15. *सीपीईसी: भारत ने सीपीईसी परियोजना का किया कड़ा विरोध*, 7 मई 2023, , www.amarujala.com , देखा गया 8 सितंबर 2024
16. *'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' से भारत को घेर रहा चीन, 'क्राड' बनेगा जवाब?*, 22 जून, 2020, www.navbharattimes.com, देखा गया 8 सितंबर 2024
17. *म्यामांर में चीन के बंदरगाह निर्माण ने पकड़ी रफ्तार, भारत की बढ़ी टेंशन जानें क्या है खतरा*, 2 जनवरी, 2024, www.navbharattimes.com, देखा गया 8 सितंबर 2024,
18. *'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' से भारत को घेर रहा चीन, 'क्राड' बनेगा जवाब?*, 22 जून, 2020, www.navbharattimes.com, देखा गया 8 सितंबर 2024
19. *चीन को पड़ोस में घेरने की कोशिश में भारत*, 1 वर्ष पहले, www.bhaskar.com/national, देखा गया 8 सितंबर 2024
20. वही
21. *भारत को मध्य पूर्व और यूरोप से जोड़ने वाला रेल-पोर्ट समझौता कितना अहम*, 10 सितंबर 2023, www.bbchindi.com , देखा गया 8 सितंबर, 2024
22. वही
23. *इजराइल पर हमास के हमले के बाद सउदी अरब की बढ़ी दुविधा क्या करेंगे क्राउन प्रिंस*, 11 अक्टूबर 2023, www.bbchindi.com , देखा गया 9 सितंबर 2024
24. *ईरानी राष्ट्रपति का चीन दौरा : भारत और दुनिया के लिए क्या हैं इसके मायने*, 14 फरवरी 2023 अपडेटेड 15 फरवरी 2023, www.bbchindi.com,देखा गया 9 सितंबर 2024
25. वही
26. *भारत ईरान ने मतभेद भुलाकर किया ये अहम समझौता, चीन पाकिस्तान पर क्या असर*, 13 मई 2024, www.bbchindi.com, देखा गया 10 सितंबर 2024

****